IR Integral Research

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

समकालीन भारत में युवा राष्ट्रवाद का बदलता स्वरूप

डॉ. मीना राठौर ✉

सहायक प्राध्यापक, हिंदी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, श्री नीलकंठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय - खंडवा.

DOI:

यह शोध-पत्र समकालीन भारतीय युवा की बदलती अवधारणा तथा राष्ट्रवाद के साथ उसके अंतर्संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि आज युवा की पहचान केवल आयु-सीमा से नहीं, बल्कि उसकी ऊर्जा, सृजनात्मकता, कार्यक्षमता और परिवर्तनकारी दृष्टि से निर्धारित होती है। वैश्वीकरण, डिजिटल माध्यमों और सामाजिक दबावों के बीच युवा एक ओर वैश्विक पहचान स्थापित करने के संघर्ष से गुजर रहा है, वहीं दूसरी ओर अपनी सांस्कृतिक जड़ों और परम्पराओं से जुड़े रहने का प्रयास भी करता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि समकालीन युवा आधुनिकता और परम्परा के बीच संतुलन स्थापित करने की जद्दोजहद में कई बार मानसिक, सामाजिक और वैचारिक द्वंद्व का सामना करता है, फिर भी उसकी सक्रियता, नवाचार और सामाजिक-राजनीतिक भागीदारी राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। साथ ही, आत्मनिर्भरता की ओर उसका बढ़ता रुझान, स्टार्टअप संस्कृति, तथा सामाजिक जागरूकता राष्ट्रवाद को नए आयाम प्रदान कर रही है, जबकि अनुशासनहीनता, त्वरित सफलता की चाह, पाश्चात्य प्रभाव और स्वास्थ्य संबंधी उपेक्षा जैसी चुनौतियाँ भी उसके समक्ष गंभीर रूप से उपस्थित हैं। इस अध्ययन के अनुसंधान प्रश्नों के माध्यम से यह निष्कर्ष सामने आता है कि युवा की परिभाषा आयु तक सीमित नहीं है, वह आधुनिकता और परम्परा के द्वंद्व से जूझ रहा है, राष्ट्रवाद के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रहा है, अपनी जड़ों से आंशिक रूप से दूर होते हुए भी पुनः उनकी ओर लौटने का प्रयास कर रहा है, तथा अनुशासन और मानसिक संतुलन की चुनौतियाँ उसके समग्र विकास में बाधा बन रही हैं; अतः यदि युवा कर्तव्यबोध, सांस्कृतिक चेतना और आत्मनियंत्रण के साथ आगे बढ़े, तो वह राष्ट्रवाद को सशक्त और सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकता है।.

Keywords: समकालीन युवा, राष्ट्रवाद, आधुनिकता बनाम परम्परा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक जागरूकता

एक अनुमान के अनुसार भारत में 18 से 35 वर्ष की आबादी युवा वर्ग में शामिल है। लेकिन वर्तमान परिवेश में युवा वर्ग को उम्र के पैमाने से परिभाषित करना शायद उतना न्याय संगत नहीं ।अब युवा की परिभाषा उसकी क्रियाशीलता और उसकी कार्यक्षमता से आंकी जाती है। युवा यानि असीम ऊर्जा,उत्साह और रचनात्मकता से भरपूर अपनी कार्यप्रणाली से इच्छित लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदैव तत्परएक वर्ग विशेष। युवा सोच और ऊर्जा उम्र की मोहताज नहीं। असाधारण सोच के साथ नये बदलाव लाने की इच्छाशक्ति और उस बदलाव के लिए असीम जोखिम उठाने की द्रढ़ता के साथ लगातार सीखते हुए आगे बढ़ते रहने की अदम्य इच्छाशक्ति से सम्पन्न मानव स्वत: युवा श्रेणी में अग्रिम पंक्ति में स्थान पाता है। सोशल मीडिया के इस दौर में हम प्रतिदिन ऐसी अनेक घटनाओं और समाचारों को पढ़ने, सुनते और देखते भी हैं, जहां पर व्यक्ति ने अपनी निष्ठा से उम्र को पीछे धकेलते हुए नये कीर्तिमान स्थापित कर रचनात्मकता को परिभाषित किया है।

समकालीन युवा एक तरफ वैश्विकजगत में अपनी पहचान की जद्दोजहद से जूझ रहा है, तो दूसरी तरफ अपनी माटी, अपने संस्कारों से अलगाव के दर्द को भी भीतर तक महसूस कर रहा है। मध्यम वर्ग में जन्मते

Received **07 April 2026**; Accepted **26 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed
Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

ही सबसे आगे रहने की अनचाही दौड़ संस्कार रूप में बीज की तरह उसके मन मस्तिष्क में बो दी जाती है। तुलना और अपेक्षा की कटीली कैंची उसके स्व, स्वप्न और सुनहरी उड़ानों के पर काट उसे व्यवस्था रूपी समझोते के साथ सामंजस्य हेतु विवश करती है । फलस्वरूप भ्रमित युवा अपने ही वर्चस्व की लड़ाई में पीसता जाता है। लेकिन परिवेशजन्य इतनी जटिलताओं के बावजूद भी उसके होंसले बुलंद है। उसने नये स्वप्न गढ़े है। उनको साकार करने का होंसला कायम किया है । एक तरफ वह अपनों की आकांक्षाओं की पूर्तिवश लगातार भाग रहा है, तो दूसरी तरफ उसके अपने दफन होते स्वप्न उसे बैचेन किये जा रहे है। विषमताओ और अनियमितताओं के इस दौर में युवा बस एक अवसर की तलाश में नजर आ रहा है। और जब कभी वह अवसर उससे आँखे चार करता है, फिर सफलता की एक नई कहानी लिखने से उसे कौन रोक पाया है। विषय या क्षेत्र चाहे जो भी हो लेकिन अब युवा हर एक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कर भावनाओं की पुरजोर अभिव्यक्ति करता है। फिर चाहे सिनेमा हो, क्रिकेट या कोई डिजिटल माध्यम।

राष्ट्रवाद की अवधारणा

समकालीन परिवेश में राष्ट्रवाद की अवधारणा में अमुलचुल परिवर्तन द्रष्टिगत होते है। समय के साथ अब वह सोच अब पुरानी पड़ चुकी, जिसमे राष्ट्र की सामूहिक पहचान वंश,भाषा, भू-भाग,धर्म - संस्कृति और राजसत्ता पर केन्द्रित होती थी। वर्तमान युवा अपनी सोच और साहस के बल पर नये राष्ट्रवाद को गढ़ रहा है। जिसमे एक तरफ परम्परा का पुरजोर समर्थन है, तो दूसरी तरफ विरोध भी। वैश्वीकरण के इस दौर में रोजगार के संकट को झेलता हमारा युवा AI का समर्थन भी करता है और भविष्य में उससे उत्पन्न खतरों से स्वयं को आगाह करता भी नजर आता है। रोजगार के बेहतरीन अवसरों की तलाश में विदेशी डगर पर डगमगाते कदमों से चलने वाले इस वर्ग को तमाम चिंता और तनाव को धुंए में उड़ाती विदेशी संस्कृति लुभाती जरुर है, पर होली,दीवाली और बैशाखी उसे अपने घर की दहलीज तक लौटा जरुर लाती है। विदेशी मुद्रा अर्जित कर अपने देश,अपने परिवार को सम्रद्ध करता युवा अन्तत: अपनी सम्रद्ध जड़ों की और लौटता अवश्य है। अब वो मूक दर्शक बन सब कुछ सिर्फ देखता भर नहीं है, बल्कि सही का समर्थन और गलत का पुरजोर विरोध दर्ज करता है। और सबसे सकारात्मक बात यह है कि इस सबके लिए अब उसे किसी की अनुमति या सिफारिश की आवश्यकता ही नही, बस एक छोटे से क्लीक से वो अपनी बात रख देता है। जिसे हम -आप एक शब्द में सोशल मीडिया कहते है।

आधुनिकता के साथ परम्परा का निर्वहन

Received **07 April 2026**; Accepted **26 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

युवा पीढ़ी मनोरंजन के लिए एक तरफ सोशल मीडिया पर वेब सीरिज देख रही है तो अपनी परम्पराओं और मूल्यों के निर्वहन के साथ अपनी आत्मिक शांति के लिए वो प्रेमानन्दजी महाराज के सत्संग को भी उतने ही लगाव से सुन रही है । स्वाद वश पिज्जा, बर्गर और मोमोस खाने वाले आज भी घर के बने दाल - चावल के दीवाने है। क्लब और पार्टियों में रात- भर थिरकने वाला युवा नवरात में गरबे करता और भण्डारे में सेवा देता नजर आता है। होस्टल में साथियों के साथ हर समय कुछ भी खाते रहने वाली युवा पीढी घर पर बनने वाले नेवैध्य को आज भी पुरे विधि विधान से ही ग्रहण करती है। सबसे बड़ी बात शादी के लिए आज भी घरवालों की राजी-मर्जी के प्रति स्वीकार का भाव है, या घरवालो को राजी करने के उपरान्त शादी की स्वीकारोक्ति है -"जीवन में रस की तलाश ही अमरत्व है। जीवन में रस या आस्वाद का अर्थ यह नहीं है कि हम केवल चखते हैं। उसका अर्थ है कि जीवन आस्वाद बनता है,सुख का भी,दुख का भी-पर,न छोटे सुख का न छोटे दुख का,हम जीवन का कोई भी अंश हेय नहीं मानते,हम उसे खण्डों में नहीं बांटते।"1 युवा राष्ट्रीयता के इस पहलू में वर्तमान भौतिक संस्कृति से प्रभावित युवा एक और जहाँ अपनी मर्जी को प्रश्रय देता है,वहीं दूसरी तरफ अपने संस्कार और परंपराओं को साथ लेकर चलने की जद्दोजहद में खुद लहूलुहान होता है।

राजनितिक दखल बनाम राष्ट्रवाद

आज का युवा संसद में पहुंच प्रश्न करता है, और यही प्रश्न राजनिक गलियारे में हलचल पैदा करते है। जिसके सकारात्मक परिणाम समस्त राष्ट्र को गहरे रूप से प्रभावित करते है। युवा राघव चड्ढा जब राज्य सभा में प्रश्न करते है कि अगर राजनीति सेवा है तो तनख्वाह किसलिए ? और अगर नोकरी है तो परीक्षा क्यों नही ? तब पुरे राजनितिक कुनबे में खलबली सी मच जाती है। आम नागरिक इसका जवाब चाहता है। परिणाम स्वरूप राजनीति के सकारात्मक पक्ष उभरने लगते है। बदलाव की बयार उन्मुक्त हो बहने लगती है। अब आम नागरिक समस्याओं के समाधान चाहता है।आश्वासन की राजनीति अब लोकप्रिय नहीं। Jen Z और AI के युग में अब ध्यान त्वरित समाधान पर है। राज्य सभा में भले सिर्फ एक राघव चड्ढा प्रतिनिधित्व कर रहे हों, लेकिन समस्त युवा वर्ग अब अपनी बात रखने और अन्याय को नकारने के लिए अनंत हथियारों से लैस है । दैनिक समाचार पत्र, सोशल मीडिया युवाओं की आवाज को आम लोगों के साथ शासन, प्रशासन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। लेकिन जब कभी यह माध्यम किसी विषय विशेष को निशाना बनाने या व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रयुक्त किए जाते हैं,तब राष्ट्र शर्मशार होता है । कई दफा ऐसा भी होता है कि जहाँ मुखर विरोध दर्ज होना था, वहाँ पर भयवश अनचाहा मौन स्थान पा जा

Received 07 April 2026; Accepted 26 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

जाता है। इस मौन की कीमत निरपराधी भविष्य को चुकानी पड़ती है-"आज हवा में बातें की जाती है। बस में ट्रेन में उत्पाद की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष होता है। लेकिन मूलभूत बातों पर अपने अधिकार के प्रश्न पर संघर्ष शायद ही होता है। हम ध्यान ही नहीं देते कि कितना विखंडन हो रहा है इस देश में। एक जलियांवाला बाग में कांड हुआ तो सारे देश में आग लग गई। एशिया क्यों नहीं लगती है कहां मर गया देश का पानी क्यों नहीं अनुभव होता है कि कहीं भी कुछ एक जगह टूट रहा है तो हमारा हिस्सा टूट रहा है हम टूट रहे हैं हमारा पूरा अस्तित्व टूट रहा है, संपूर्ण जाती टूट रही है, यह अनुभव क्यों नहीं होता है?2 वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में प्रतीत होता है मानो युवा शक्ति भ्रमित है। अधिकारों की होड़ उसे कर्तव्य परायणता से विमुख कर रही है। विरोध का वर्तमान वीभत्स स्वरूप भयभीत करता है। क्या शक्ति और हिंसा कभी शांति का पर्याय हो सकती है ?

सामजिक जागरूकता बनाम राष्ट्रवाद

वर्तमान युवा सामाजिक जागरूकता के प्रति भी समर्पित नजर आता है । अब वह उम्र के नाम पर सामाजिक जिम्मेदारियों से मुँह नही मोड़ता बल्कि अब वह इतना सक्षम, इतना सतर्क हो गया है,कि अपने आसपास के परिवेश और समाज में हो रहे घटनाक्रम को देखकर त्वरित प्रतिक्रिया दर्ज करता है। समाज के किसी सकारात्मक पक्ष को जब वह अपनी आवाज देता है, तब समस्त राष्ट्र में सकारात्मकता का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। वहीं इसके दूसरे पहलू में जब कहीं समाज विरोधी या राष्ट्र विरोधी घटनाक्रम का विरोध दर्शाती युवा शक्ति की त्वरित प्रतिक्रिया जब नकारात्मकत विध्वंसकता का रूप धारण कर लेती है,तब उसका दुष्परिणाम आने वाली कई पीढियां के भविष्य को अंधकारमय कर देता है । वर्तमान परिवेश जन्य आपाधापी में सबको जल्दी है। सबको सब कुछ चाहिए,त्वरित चाहिए,लेकिन समय सबके पास नहीं है। फलत; होता यह है कि हर व्यक्ति क्रोधित और कुंठित होता जा रहा है। वह इस भागम -भाग भरी जीवन शैली में सब कुछ प्राप्त करने की चाहत में सब कुछ खोते जा रहा है। जबकि भारतीय जीवन शैली हमेशा सतत कार्य और धैर्य धारण करने की बात करती रही है....धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय। माली सींचे सौ घड़ा,ऋतु आए फल होय।। विद्यानिवास मिश्र वर्तमान युवा की मनोदशा पर तंज करते है -"हमारे यहां बच्चा एक और स्वतंत्र होना चाहता है,आधुनिक होना चाहता है,दूसरी और पिता पर आश्रित भी रहना चाहता है। पिता की कमाई भी खाना चाहता है,और दहेज से सब वसूल कर लेना चाहता है,जो पूरे जन्म में पैदा नहीं करेगा-सारी चीज वसूल कर लेना चाहता है-अपने बल पर,अपने परिश्रम से कुछ नहीं करेगा। वह अमेरिकी अर्थ में आधुनिक भी नहीं है। इतना कमजोर इतना बेईमान वह किसी तरह आधुनिक नहीं है

Received 07 April 2026; Accepted 26 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

वह उस अनुशासन में भी नहीं है जिस अनुशासन में बंधकर एक दूसरी प्रकार की स्वतंत्रता का बोध होता है।”3 युवा अनुशासनहीनता वर्तमान परिवेश की सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है। अपने लिए सब कुछ पा लेने और उसे भोगने की परिवेशजन्य प्रवृत्ति स्वार्थ और व्यक्तिवादिता की अंधी दौड़ में शामिल हो पहुँच कही नही रही ।

भारतीय परिवेश और परंपरा में लेने की अपेक्षा सब कुछ देने का भाव समाया हुआ है। आप परिवार या प्रकृति से जो कुछ भी लेते है, वह एक तरह का ऋण है, जिसे आपको चुकाना अवश्य है। भारतीय चिरंतन परंपरा में यह जो ऋण का भाव है,वही व्यक्ति को स्वार्थपरता से ऊपर उठाकर वासुदेव कुटुम्बकम की उस साधनावस्था से जोड़ता है, जिससे एक खुशहाल राष्ट्र का निर्माण होता है- “जिससे कई -कई ऋणों में बंध करके - मनुष्य ऋण,देव ऋण, पितृ ऋण और ऋषि ऋण में बंध कर आदमी मुक्त होता है। क्योंकि जब ऋणों की पूर्ति करता है तो उसके अहंकार का अपने आप ही शमन हो जाता है। संसार में उसकी मुक्ति बिना ऋणों की पूर्ति के नहीं होती।ऋणों की वह पूर्ति एक अनुशासन है, ऋण पूर्ति के बाद ही स्वाधीनता मिलती है। स्वाधीनता एक कर्ज है, जिसको चुकाना पड़ता है, और अपने एक-एक बूंद रक्त से चुकाना पड़ता है । जब चुकाने पर स्वाधीनता मिलती है तो वह वास्तविक स्वतंत्रता होती है।”4लेकिन जिस पीढ़ी को स्वतंत्रता मुफ्त में उपहार की तरह मिली हो वह उस स्वतंत्रता की कीमत आंकने में सक्षम ही नहीं।

आत्मनिर्भरता बनाम राष्ट्रवाद

वर्तमान युवा पीढ़ी अब बड़ी - बड़ी डिग्रियां लेकर नौकरी की तलाश में दर-दर भटकना छोड़ नए-नए स्टार्टअप के माध्यम से स्वयं को साबित करने का पुरजोर प्रयास करते नजर आती है। फलस्वरूप अपने साथ दूसरों को बेरोजगारी के दंश से मुक्त करने का माध्यम भी बन रही है। सरकारी नौकरी के प्रति कम होता मोह और अपने स्वयं के बलबूते रोजगार खड़ा करने की चाह वर्तमान युवा में आत्मनिर्भरता की सच्ची समझ विकसित कर रही है। भारतवर्ष हमेशा से कृषि प्रधान देश रहा है। हमारे देश का ग्रामीण कृषक कृषि कार्य में संलग्न होकर अन्न के क्षेत्र में राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाती है। पाश्चात्य सभ्यता के वशीभूत हो आराम पसंद पीढ़ी ने कृषि कार्य से मुंह मोड़ नौकरी -पैसा जीवन को ही सुख समृद्धि का एकमात्र साधन मान लिया। फलस्वरूप गांव के गांव खाली होते गए और शहरों में आबादी का विस्फोट स्लम रूपी नारकीय जीवन का जीवंत दस्तावेज बनने लगा। जहां पूरा जीवन सिर्फ रहने और खाने की लड़ाई लड़ने में नष्ट हो रहा हो वहाँ राष्ट्रहित के लिए सोचने का समय किसके पास है ।

शिक्षित युवा अब अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है। और सच्चे अर्थों में भारतवर्ष की यही पहचान

Received **07 April 2026**; Accepted **26 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 04, April. 2026

होगी कि उसका पढ़ा लिखा शिक्षित,समृद्ध युवा अपनी जड़ों की ओर लौटे। पुरातन प्रणाली के साथ आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए पीढ़ीयों से संचित परम्परा व ज्ञान का उपयोग कर सेहतमंद भारत का निर्माण करें। वर्तमान युग में यही सच्चे अर्थों में राष्ट्रीयता है। अब युवा भारतीय जीवन पद्धति को न सिर्फ समझ रहा है बल्कि उसे जीवन में उतारने का प्रयास करते भी नजर आ रहा है-"क्या कारण है कि कैंसर से पीड़ित हेमिंग्वे जैसा एक संपन्न और प्रतिष्ठित यशस्वी कृतिकार आत्महत्या की बात सोचता है और बरसों तक कैंसर को झेलते हुए भी महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज जीवन को केवल अखंड साधना के रूप में जिए चले जाते हैं। एक रोग की दो प्रतिक्रियाएं दो जीवन दर्शनों को ही प्रतिबिंबित करती है।"5 भारतीय जीवन पद्धति ने घोर निराशा के क्षणों में भी आशा रूपी किरण के लिए सदैव प्रयासरत और प्रतीक्षारत रहना सिखाया है। यही प्रयास और प्रतीक्षा राष्ट्रीयता को नए स्वरूप में नई उम्मीद के साथ नवीन जीवन दृष्टि देती है।

युवा स्वास्थ्य

स्वस्थ युवा स्वस्थ राष्ट्र की नीव होता है। युवा शक्ति प्रत्येक राष्ट्र के भविष्य की धरोहर है। उसके हाथों में राष्ट्र की सुरक्षा और लगातार उन्नति के पथ पर अग्रसर रहने की महती जिम्मेदारी है। हमारी प्राचीन विभूतियां, हमारे राष्ट्र के निर्माताओं ने युवा शक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आव्हान किया है। लेकिन क्या वास्तव में वर्तमान युवा शक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हैं ? आधी -आधी रात को मोमोज, पिज़्ज़ा, बर्गर खाने वाली युवा पीढ़ी मोटापे से ग्रस्त हो असमय ही हार्ट अटैक की शिकार हो रही है। स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निर्मित होता है। शरीर को कूड़ेदान बना अनाप सनाप कचरा उसमे डालने को आधुनिकता का पर्याय मानने वाली पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। ओटीटी के नाम पर तमाम तरह की अश्लशीलता को चोबीस घण्टे ग्रहण करने वाली युवा नैतिकता पतन के अंगिम छोर पर पहुंच चुकी है।

वर्तमान युवा स्वास्थ्य के प्रति कितना जागरूक है ? भारतीय जीवन शैली में प्राचीन ऋषि मुनियों ने योग को जीवन का सार माना। योग तन -मन की साधनावस्था है। योग तन और मन की क्रियाओं में एकाग्रता उत्पन्न कर चित्त को उचित दिशा में स्थिर करता है। आज स्थिति यह है कि सम्पूर्ण विश्व में योग के लिए अलग-अलग केंद्र खुल गए। 21 जून को विश्व योग दिवस घोषित किया गया है।लेकिन भारतवासियों पर दृष्टिपात करें तो पता चलेगा कि हमने योग को सिर्फ अपने शरीर में उत्पन्न होने वाली तरह-तरह की व्याधियों से बचाने के उपाय तक ही सीमित करके रखा है।-"पश्चिम में योग के केंद्र खुलने लगे है। पश्चिम के वैज्ञानिक गीता की बात

Received 07 April 2026; Accepted 26 April 2026. Available online: 30 April 2026. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

करते हैं,पश्चिम में हरि कीर्तन के रिकॉर्ड काले बाजार में बिकने लगे हैं या रविशंकर संयुक्ता पाणिग्रही की बड़ी धूम है। और स्वयं हमें योग से इतना ही मतलब है कि उससे उच्च रक्तचाप ठीक हो जाए,पेट ठीक रहे,फिगर बनी रहे ।"6 योग के प्रतिपादक राष्ट्र के निवासियों का योग के प्रति समर्पण भाव विचारणीय है। आखिर इस बात का इंतजार क्यूँ कि विदेशी राष्ट्र हमारी धरोहरों का पेटेंट करा उन पर अपना एकाधिकार कर हमसे उपयोग की कीमत वसूले। घर की मुर्गी दाल बराबर वाली सोच चरितार्थ होती नजर आती है।

स्वकेंद्रित निर्णय छोड़ राष्ट्रहित में निर्णय वाली भावना जैसे विलुप्त हो चुकी। अब हमारे हर निर्णय में राष्ट्र का भविष्य, राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र के प्रति हमारा समर्पण द्रष्टिगत नहीं -"यह बात सही है कि पीढ़ी दर पीढ़ी माता-पिता से संतान को या गुरु से शिष्य को सोंपी जाने वाली थाती परंपरा कहलाती है पर यह सोंपना और ग्रहण करना निर्जीव व्यापार नहीं है,सोंपने वाले को सोंपने की क्षमता प्राप्त करनी होती है,ग्रहण करने वाले को ग्रहण करने की। एक विशेष प्रकार का तप दोनों के लिए समान रूप से अपेक्षित है,इसके अलावा सौंपने वाले से अपेक्षित है कि वह यह भाव रखें कि वह देने वाला नहीं है,वह इस आशा से दे कि जो दिया जा रहा है,उसमें अभिवृद्धि होगी,लेने वाले से अपेक्षा की जाती है कि पूरी तरह अकिंचन होकर प्रणत भाव से ले।"7 वर्तमान परिद्रश्य में सोंपने और ग्रहण करने का यह भाव विकसित करने की महती आवश्यकता है। पाश्चात्य परिवेश से प्रभावित हो अपनी गरिमामय संस्कृति को पिछड़ा या पुरातन कह उसके प्रादुर्भाव को अस्वीकारना दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है। होना यह चाहिए कि हमारी संस्कृति और हमारे संस्कारों की थाती बीज रूप में नवजात पीढ़ी में रोपी जाए। अपने परिवेश के चौखटे में ही स्वतंत्रता को महसूस कर अपनी प्राचीन चिंतनधारा को नए आयाम देते हुए व्यक्ति स्वातन्त्र्य के नये खाचे स्थापित किये जाये। ना किसी का दबाव हो ना किसी का प्रभाव हो तमाम बंधनों से मुक्त अपनी स्वतंत्र छवि के साथ स्वतंत्र निर्णय के बल पर स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ राष्ट्र निर्माण की असीम ऊर्जा को समस्त दिशाओं में प्रसारित करना हमारा एकमात्र ध्येय हो।

सन्दर्भ सूची:

1 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन, संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 26

2 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन, संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 26

3 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन, संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 26

4 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन, संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 26

5 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन, संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 26

Received **07 April 2026**; Accepted **26 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

6 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन,

संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 26

7 भारत की पहचान: विद्यानिवास मिश्र के लेखों का संकलन,

संपादन -गिरीश्वर मिश्र, पृष्ठ- 226

Received **07 April 2026**; Accepted **26 April 2026**. Available online: **30 April 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License